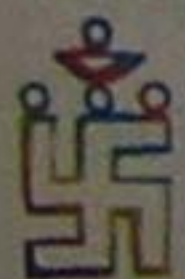


# श्री पार्श्वनाथ

## स्तोत्र



नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजै भजै नाथ शीशं ॥  
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमो जोड़ि हाथं, नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथं ॥१॥  
गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्र्यो तू छुड़ावै, महा आगतै नागतै तू बचावै ॥  
महावीरतै युद्ध में तू जिताये, महा रोगतै बंधतै तू छुड़ावै ॥२॥  
दुखी दुःख हर्ता सुखी सुखकर्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्ता ॥  
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं ॥३॥  
दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने ॥  
महासंकटों से निकारै विधाता, सबै सम्पदा सर्व को देहि दाता ॥४॥  
महाचोर को वज्र को भय निवारे, महापौन के पुंजतै तू उबारै ॥  
महाक्रोध की अग्नि को मेध-धारा, महालोभ-शैलेश को वज्र धारा ॥५॥  
महा-मोह अंधेर को ज्ञान भानुं, महा-कर्म कांतार को दो प्रधानं ॥  
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी, हर्यो मान तू दैत्य को हो अकामी ॥६॥  
तू ही कल्प वृक्षं तू ही कामधेनुं, तू ही दिव्य चिंतामणी नाग एनं ॥  
पशु नर्क के दुःखतै तू छुड़ावै, महा स्वर्ग तै मुक्ति में तू बसावै ॥७॥  
करे लोह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी ॥  
करै सेव ताकी करे देव सेवा, सुनें वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥८॥  
जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै ॥  
बिना तोहि जाने धरे भव धनेरे, तुम्हारी कृपा तैं सरै काज मेरे ॥९॥



गणधर इन्द्र न कर सकें, तुम विनती भगवान।

'द्यानत' प्रीति निहार कैं, कीजे आप समान ॥१०॥

